International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 230-231

हिंदी : विभिन्न व्यवहारों की भाषा

कृष्णा देवी
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश की किसी भाषा को राजभाषा का दर्जा देने की बात उठी तो स्वाभावतः हिंदी को निर्विरोध चुना गया। राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने के साथ–साथ हिंदी भाषा में अपूर्ण शक्ति आई और उसका कार्यक्षेत्र व्यापक हुआ।

''भाषा समाज में संप्रेषण का माध्यम है। आधुनिक जीवन के कई क्षेत्रों में भाषा के माध्यम से संप्रेषण होता है जैसे कार्यालयों में, विज्ञान के क्षेत्र में। यह युग की माँग है। इन क्षेत्रों में भाषा के प्रयोग के लिए योजना बनाना, व्यवहार के लिए भाषा को विकसित करना, व्यक्तियों में व्यवहार की योग्यता पैदा करना – ये प्रयोजनमूलक भाषा के आयाम हैं। इस तरह प्रयोजनमूलक भाषा व्यवसाय से जुड़ती है, समाज की आवश्यकताओं से जुड़ती है। सामान्यतः साहित्यपरक भाषा का अध्ययन व्यक्ति सापेक्ष है, वैयक्तिक अनुभूति के लिए है, प्रयोजनमूलक भाषा सामाजिक प्रयोजनों से जुड़ती हैं; समाज सापेक्ष है।''[1]

भाषा सामाजिक वस्तु है और उसके माध्यम से ही सभी सामाजिक व्यवहार संपन्न होते हैं। भाषा का समाज के विविध कार्यों में उपयोग न किया जाए तो वह भाषा सीमित दिशाओं में ही विकास कर पाएगी।

भाषा के दो पक्ष है : संरचना पक्ष, प्रयोग पक्ष।

सरंचना से आशय है भाषा की अपनी आंतरिक संरचना जो ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ के स्तर पर होती है और संरचनात्मक भाषाविज्ञान जिसका अध्ययन करता है।

प्रयोग से तात्पर्य है समाज द्वारा उसका प्रयोग जो विभिन्न सांस्कृतिक, प्रशासनिक, तकनीकी तथा पारिस्थितिक आदि संदर्भों में होता है और जो ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ की दृष्टि से भाषा को अनेकानेक रूप प्रदान करता है।

आधुनिक युग में सामाजिक–जीवन के अनेक क्षेत्रों में प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा प्रयोजनमूलक भाषा कहलाती है और ''भाषा के प्रकार्य के अनुसार उसके अनेक रूप–भेद होते है। साहित्यिक हिंदी, कार्यालयी हिंदी, सामाजिक हिंदी, व्यावसायिक हिंदी, विधि एवं कानून कार्य सम्बद्ध हिंदी, जनसंचार के माध्यम के लिए प्रयुक्त हिंदी, विज्ञान और तकनीकी हिंदी इत्यादि।''[2]

हिन्दी को जब हम व्यवहार की दृष्टि से देखते हैं तो उसके भिन्न–भिन्न सामाजिक स्वरूप उभरने लगते हैं। डॉ॰ सुरेश कुमार, डॉ॰ भोलानाथ तिवारी तथा डॉ॰ रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने इसे छः वर्गों में बाँटा है :

(1) बोलचालीय हिंदी (2) व्यापारी हिंदी (इसमें मंडियों की भाषा, सर्राफे के दलालों की भाषा, सट्टा बाजार की भाषा आदि कई उपरूप है) (3) कार्यालयी हिंदी (कार्यालय भी कई प्रकार के होते हैं और उनमें भी भाषा के स्तर पर कुछ अन्तर हैं) (4) शास्त्रीय हिंदी (विभिन्न शास्त्रों में प्रयुक्त भाषाएं भी शब्द के स्तर पर कुछ अलग हैं। इसमें संगीतशास्त्र, काव्यशास्त्र, दर्शनशास्त्र, लोगशास्त्र, राजनीति शास्त्र, विधि शास्त्र, आदि भाषाएं हैं।) (5) तकनीकी हिंदी (इंजीनियरिंग, बढ़ईगिरी, लुहारी, प्रैस, फैक्टरी, मिल आदि की तकनीकी भाषा) (6) साहित्यिक हिंदी (इसमें कविता, साहित्य तथा नाटक की भाषा में अन्तर होता है)

''भाषा, मनुष्य के पास ऐसा साधन है जिसके माध्यम से व्यक्ति एक–दूसरे के सम्पर्क में आता है। चूंकि भाषा का प्रयोग समाज में किया जाता है और समाज बहुमुखी होता हैं अतः भाषा में अनेकरूपता देखने को मिलती है। इसी अनेकरूपता के कारण भाषा में विभिन्न प्रकार में विकल्पन (Variations) दिखाई देते हैं। भाषा में प्राप्त होने वाले क्षेत्रीय, सामाजिक एवं प्रयोजनमूलक रूप भाषा विकल्पनों के ही उदाहरण हैं जो विभिन्न प्रकार के प्रयौताओं द्वारा विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विभिन्न संदर्भों में, भाषा का प्रयोग किए जाने के फलस्वरूप विकसित होते हैं।''[3]

कोई भी भाषा अपने सभी प्रयोगों में हमेशा एक–सी नहीं होती। ''विषय तथा सामाजिक परिस्थिति आदि के आधार पर भाषा के अनेकानेक रूप हमारे सामने आते हैं। उदाहरण के लिए खेल के मैदान में हम एक प्रकार की हिंदी का प्रयोग करते है। कार्यालय में दूसरे प्रकार की हिंदी। ऐसे ही पत्रकारिता, विज्ञापन, कानून, साहित्य या किसी कारखाने में प्रयुक्त हिंदी एक नहीं होती। इस तरह खेल, कार्यालय, कानून, साहित्य, कारखाना आदि में प्रयुक्त हिंदी के विभिन्न रूप हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियाँ हैं।''[4]

किसी भाषा की विभिन्न प्रयुक्तियाँ पारिभाषिक शब्दावली की दृष्टि से तो अलग–अलग होती हैं। कभी–कभी अपनी भाषिक संरचना में भी अलग–अलग होती हैं उदाहरणार्थ कार्यालयी हिंदी में कार्यालय में प्रयुक्त प्रशासनिक शब्दावली (जैसे प्रभाग, अनुभाग, संस्तुत, आवती, पावती, प्रतिवेदन)। तो अन्य प्रयुक्तियों से अलग होती ही हैं, उसकी भाषिक संरचना की यह विशेषता होती हैं कि उसमें निर्वैयक्तिक और कर्मवाच्य के वाक्य ही अपेक्षाकृत अधिक आते हैं जैसे 'सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है' न कि' मैं सर्वसाधारण को सूचित करता हूँ'

किसी भाषा की विभिन्न प्रयुक्तियों के आधार तीन है

1. **विषय :** किसी भाषा का जितने विषयों में प्रयोग होगा उसकी उतनी ही प्रयुक्तियाँ भी होंगी उदाहरणार्थ हिंदी की कार्यालयी हिंदी, पत्रकारिता की हिंदी, खेलकूद की हिंदी, व्यापार की हिंदी, कल–कारखाने की हिंदी तथा विधि की हिंदी आदि प्रयुक्तियाँ 'विषय' पर ही आधारित हैं। विषय के आधार पर विकसित प्रयुक्तियाँ पारिभाषिक शब्दावली तथा कभी–कभी भाषिक संरचना में एक–दूसरे से भिन्न होती है।
2. **अभिव्यक्ति के रूप :** किसी भी भाषा में अभिव्यक्ति दो रूपों में होती हैं : मौखिक रूप में, लिखित रूप में। भाषा के इन दोनों रूपों में काफी अंतर होता है। इस तरह प्रत्येक भाषा की

मौखिक तथा लिखित प्रयुक्तियाँ होती हैं। उदाहरणार्थ बोलचाल की हिंदी, या आकाशवाणी और दूरदर्शन में बिना लिखित आधार के प्रयुक्त हिंदी (जैसे प्रश्नोत्तर या परिचर्चा आदि में) मौखिक प्रयुक्ति का उदाहरण है तो साहित्य समाचार पत्र या कार्यालय में प्रयुक्त हिंदी लिखित प्रयुक्ति का उदाहरण है। मौखिक तथा लिखित प्रयुक्तियों में मुख्यतः निम्नांकित अंतर होते हैं :

(क) मौखिक प्रयुक्ति के वाक्य प्रायः शब्दचयन, पदक्रम तथा संयोजन आदि की दृष्टि से लिखित प्रयुक्ति के वाक्य की तरह बहुत शुद्ध नहीं होते क्योंकि लिखित प्रयुक्ति के वाक्य की तरह उसे सुधारने का अवसर नहीं मिलता।

(ख) मौखिक प्रयुक्ति के वाक्य प्रायः अधूरे होते हैं जिन्हें श्रोता प्रसंग से पूरे वाक्य में परिवर्तित करके समझ लेता है। लिखित प्रयुक्ति के वाक्यों में यह बात नहीं होती।

(ग) मौखिक प्रयुक्ति बोलने वाले की आंगिक चेष्टाओं के कारण बहुत प्रभावशाली हो जाती है जबकि लिखित प्रयुक्तियों में यह बात नहीं होती।[5]

प्रयुक्ति के इन दो भेदों के आधार पर हमने अभिव्यक्ति के रूप कहा है, इसे वार्ताप्रकार भी कहा गया है।

3. **शैली :** वक्ता–श्रोता या लेखक–पाठक के सामाजिक संबंध का जब उनके बीच की भाषा पर प्रभाव पड़ता है तो शैलीय प्रयुक्तियों का जन्म होता है। उदाहरणार्थ उनके बीच की भाषा की शैली कभी तो औपचारिक हो जाती है (कृपया उक्त अवसर पर आप भी पधारने का कष्ट करें) , कभी अनौपचारिक (उक्त अवसर पर तुम भी आओ) और कभी अंतरंग (उक्त अवसर पर आना मत भूलना, आओगे ना)। कभी–कभी कुछ और भी शैलियाँ मिलती हैं।

प्रयोजनमूलक हिंदी, हिंदी भाषा की एक प्रयुक्ति है। इसकी आधारभूत संरचना तो वही है जो हिंदी भाषा की है, पर विशिष्ट प्रयोजनों के लिए, विशिष्ट संदर्भों में प्रयुक्त होने के कारण इसकी संरचना और शब्दावली विशिष्ट हो जाती है।

मिलों से भारी आवक के बीच चीनी कमजोर

चीनी का अधिक उत्पादन होने के बीच मिलों से पर्याप्त आपूर्ति और माँग में कमी के चलते समीक्षाधीन सप्ताह के दौरान दिल्ली थोक बाजार में चीनी की कीमतों में 60 रुपए क्विंटल तक की गिरावट दर्ज की गई। बाजार सूत्रों के अनुसार पिछले साल का बचा माल इस साल लाने और भारी मात्रा में गन्ने की पैदावार के साथ–साथ विदेशों में कमजोर रूख की खबरों से भी बाजार धारणा प्रभावित हुई।

जनसत्ता / 13 सितम्बर 2017

उक्त उदाहरण में विशिष्ट शब्दावली प्रयुक्त है – आवक, माँग, आपूर्ति, कमजोर, कमजोर रूख, तेजी।

अनुभवी टेनिस खिलाड़ी पेस की शीर्ष 50 में वापसी

अनुभवी टेनिस खिलाड़ी लिएंडर पेस ने न्यूपोर्ट बीच पर चैलेंजर खिताब जीतने के साथ शीर्ष 50 में वापसी की और 14 पायदान की छलांग लगाकर 47वें स्थान पर पहुँच गए। पेस ने अमेरिका के जेम्स सेरेटानी के साथ न्यूपोर्ट बीच टूर्नामेंट जीता और 125 रैंकिंग अंक हासिल किए।

खेल पृ. 12, जनसत्ता 30 जनवरी 2017

उक्त उदाहरण में खिताब जीतना, शीर्ष, पायदान की छलांग इत्यादि विशेषीकृत शब्दावली प्रयुक्त हुई है।

लिवाली के कारण थोक बाजार में खाद्य तेलों की कीमतों में तेजी आई। मूंगफली मिल डिलीवरी तेल गुजरात के भाव 180 रुपए की तेजी के साथ सप्ताहंत में 10,580 रुपए कुंतल बंद हुए। मूंगफली साल्वेंट रिफाइंड तेल के भाव 1650 से 1700 रुपए से बढ़कर 1670 से 1720 रुपए प्रतिदिन बंद हुए।

जनसत्ता 4 जनवरी 2017, पृ. व्यापार

उक्त उदाहरण में लिवाली, तेजी इत्यादि विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग हुआ है।

दैनिक समाचार पत्रों में प्रायः व्यापार एवं खेल का एक–एक पूरा पृष्ठ होता है जिसकी हिंदी की अपनी अलग ही पहचान होती है जो विशिष्टता लिए हुए होती है। हिंदी का प्रयोजनमूलक स्वरूप जब उद्देश्य की उपादेयता करता है तो वह न केवल व्यवस्था व जनता के मध्य सेतु का कार्य करता है अपितु अंतर्राष्ट्रीय संबंधों तथा व्यवस्थाओं के निष्पादन में भी भागीदारी प्राप्त कर लेता है। अतः उसका स्वरूप विशिष्ट होना निश्चित है।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास, एम॰एच॰डी॰–6, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली (2005), पृ॰ 57
2. दंगल झाल्टे, प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धान्त और प्रयोग (2009), पृ॰ 46
3. गवेषणा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा 98 / 2011
4. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, प्रयोजनमूलक हिंदी : चर्चा परिचर्चा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 1974
5. डॉ॰ कृष्ण कुमार गोस्वामी, शैक्षिक व्याकरण और व्यवहारिक हिंदी, पृ॰ 15